VISION IAS

www.visionias.in

17 DEC 2021

SUBJECT:	ESSAY	Test Code:	1	9	9	3
Name of Candidate	Devesh Parashar					
Medium Hindi/Eng.	Hindi medium	Registration Number	5	2,0	4,9	7
Center	Mukherjee Nagar (MN).	Date	1	7/1	2/	2021

INDEX TABLE

Q. No.	Page No.	Maximum Marks	Marks Obtained

Total Marks Obtained:

Remarks :

INSTRUCTIONS

1. Do furnish the appropriate details in the answer sheet (viz. Name, Registration Number and Test Code).
   उत्तर पुस्तिका में सूचनाएं भरना आवश्यक है (नाम, प्रश्न–पत्र कोड, विद्यार्थी क्रमांक आदि)।
2. All questions are compulsory.
   सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
3. The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
   प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिए गए हैं।
4. Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate, which must be stated clearly on the cover of this Question-Cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in medium other that the authorized one.
   प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहिए जिसका उल्लेख आपके प्रवेश पत्र में किया गया है और उस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न–सह–उत्तर (क्यूसीए) पुस्तिका के मुख्य पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिए। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिए गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।
5. Word limit in questions, if specified, should be adhered to.
   प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिए।
6. Any page or portion of the page left blank in the Question-Cum-Answer Booklet must be clearly struck off.
   उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिए।

EVALUATION INDICATORS

1. **Contextual Competence**
2. **Content Competence**
3. **Language Competence**
4. **Introduction Competence**
5. **Structure - Presentation Competence**
6. **Conclusion Competence**

Overall Macro Comments / feedback / suggestions on Answer Booklet:

1.

2.

3.

4.

5.

6.

All the Best

VISION IAS™

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

निबंध : Section A

विकास वह अधिकाधिक स्वतंत्रता है, जो लोगों को ऐसा जीवन जीने की अनुमति देती है जिसे वे महत्त्वपूर्ण मानते हैं।

"विकास का वास्तविक अर्थ मानव की क्षमताओं और स्वतंत्रता में वृद्धि करना है ताकि उसके जीवन की गुणवत्ता में सकारात्मक परिवर्तन आ सके।"

– अमर्त्य सेन

अमर्त्य सेन द्वारा कही गई उपर्युक्त पंक्तियाँ विकास को सरल और स्पष्ट बयान कर रही हैं। वास्तविक विकास भी यही है। इसे

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

विकास के सेन मॉडल के नाम से जाना जाता है।

वस्तुतः मानव ने अनेक सभ्यताओं और संस्कृतियों की गलियों से आधुनिक विश्व की यात्रा कर ली है। इस दौर में उसने ना सिर्फ परिवर्तन को देखा है बल्कि स्वयं को भी परिवर्तित किया है इसी परिवर्तन का नाम "विकास" है।

विकास जितना कहने और सुनने में सरल प्रतीत होता है, यह उतने ही जटिल और जटिल आयाम अपने अंदर समेटे हुए है। बार-बार इस संदर्भ में प्रश्न सामने आते हैं कि आखिर विकास है क्या? यह कैसे होता है? क्या कोई स्पष्ट मानक और परिभाषा है? अगर है

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

तो फिर उसके मापक एवं पैमाने क्या है? इसका स्वतंत्रता से कैसा संबंध है? आदि आदि। इन्हीं का विश्लेषण हमें लक्ष्य तक पहुँचाएगा।

सर्वप्रथम अगर विकास के अर्थ की बात करें तो इसकी कोई स्पष्ट परिभाषा नहीं है। अलग-अलग आयामों और स्थितियों में इसे भिन्न-भिन्न रूप में परिभाषित किया है। इसीलिए विश्व बैंक ने विकास कि व्याख्या गति व परिवर्तन के तौर पर की है। इसके अनुसार विकास वह गति है जो अपने साथ समस्त क्षेत्रों में सकारात्मक परिवर्तन को लाती है।

इस रूप में विकास एक सतत अवधारणा है जो निरंतर

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

बेहतरी का प्रयास करती है।

विकास के संदर्भ में सबसे महत्वपूर्ण बात है इसे स्वतंत्रता के साथ जोड़कर देखा जाना। वास्तव में स्वतंत्रता को ऐसे अवसर एवं परिस्थितियों का समुच्चय माना जाता है जहाँ कोई व्यक्ति अपने अंदर निहित संभावनाओं का साकारित कर सके। एवं: ऐसी परिस्थितियाँ विकास ही उपलब्ध करा पाता है। यही कारण है कि अमर्त्य सेन ने विकास को स्वतंत्रता का घनिष्ठ मैत्री माना है। इसे उदाहरण द्वारा ऐसे समझा जा सकता है कि कोई निर्धन बच्चा, शिक्षा की स्वतंत्रता तब तक प्राप्त नहीं कर सकता जब तक कि उसका आर्थिक व सामाजिक विकास ना हो।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

हम विकास को अलग-अलग साँचों में भी ढाल सकते हैं। ऐतिहासिक दृष्टिकोण से दिखाई देता है कि पहले अपने राज्य का विस्तार और शत्रु पर विजय को ही विकास माना जाता था। लेकिन विकास की आधुनिक व्याख्या में यह साम्राज्यवाद का रूप है जो उपनिवेशीकरण कर अन्यों की स्वतंत्रता को बाधित करता है।

साथ ही आर्थिक दृष्टि से विकास का अर्थ GDP के आकार में विस्तार, राष्ट्रीय एवं प्रति व्यक्ति आय में विस्तार और आर्थिक विषमता में कमी से लिया जाता है। इन तत्वों की उपस्थिति पर ही आर्थिक स्वतंत्रता सुनिश्चित होगी और लोगों की कम बास्केट के संदर्भ में

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

स्वतंत्रता छेदेगी। वहीं उसके अभाव में अधिकांश लोग कुछ मुट्ठीभर पूँजीपतियों द्वारा किए गए पूंजी के संकेंद्रण पर निर्भर हो जाएंगे ऐसी स्थिति में उनकी स्वतंत्रता जाती रहेगी। ऑक्सफैम कि हालिया रिपोर्ट भी यही दर्शाती है कि के केवल 10% लोगों के पास करीबन 77 फिसदी संसाधन मौजूद है

विकास की सामाजिक अवधारणा तो स्वतंत्रता के और भी निकट है। लैंगिक समानता, भेदभाव समाप्ति, शांतिपूर्ण सहअस्तित्व को सामाजिक विकास की श्रेणी मे जाती है ऐसे समाज में व्यक्ति अपने विकास हेतु स्वतंत्र है। हालिया तौर पर देखें तो तीन तलाक प्रथा को

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

गैर कानूनी घोषित करना, धारा 377 को निरस्त किया जाना आदि सामाजिक विकास के माध्यम से स्वतंत्रता को बढ़ावा दिए जाने के उदाहरण हैं।

विकास का यही दृष्टिकोण लैंगिक आयाम पर भी बल देता है। लैंगिक दृष्टि से विकास का अर्थ ही है, लिंग के आधार पर बंधनों की समाप्ति और स्वतंत्रता की प्राप्ति। यह महिला स्वतंत्रता का आधार है। महिलाओं का घरों से निकलकर आर्थिक उत्पादन के विभिन्न स्तरों में संलग्न होना उनको स्वतंत्रता मुहैया कराना ही तो है। यही उन्हें आर्थिक विकास में भागीदारी की अनुमति देता है। इसी संदर्भ में हिलेरी क्लिंटन कहती हैं कि- "महिलाएं

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

इस विश्व में योग्यता का सबसे बड़ा अग्रप्रमुख रिसीवादर डैम की तरह है।"

इसी क्रम में आगे बढ़ते हुए पर्यावरणीय दृष्टिकोण पर विचार करें तो पाते हैं कि सतत विकास और पेरिस समझौते जैसी अवधारणाएँ विकास और स्वतंत्रता का ही मिला-जुला रूप है। यह आगे बढ़ने के साथ साथ भावी पीढ़ी की संसाधन उपयोग की स्वतंत्रता को भी सुनिश्चित करता है।

अब इस बात का अंदाजा लगाना मुश्किल नहीं है कि कैसे विकास आपको स्वतंत्र करता है और स्वतंत्र होकर आप पुन: अपने आप का विकास करते हैं। लेकिन सवाल

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

से है कि इस विकास के मानक क्या हैं और क्या इन मानकों ने वास्तव में समानता का सम्पूर्ण वितरण सुनिश्चित किया है। इस हेतु सूक्ष्म विश्लेषण आवश्यक है।

भारत के संदर्भ में बात करें तो स्वतंत्रता पश्चात भारत ने लगभग हर क्षेत्र में विकास मानकों पर उच्च स्थिति को प्राप्त किया है। फिर चाहे वह 1991 के आर्थिक सुधार हो या वंचित वर्गों की सुरक्षा हेतु सामाजिक अभियान। पंचायती राज द्वारा विकेन्द्रीकरण और महिलाओं को राजनीतिक प्रतिनिधित्व देने की बात हो या प्रौद्योगिकी में क्षमता हासिल करने का स्लोगन। सभी में हमने ~~विकास~~ तो किया ही है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

लेकिन कुछ सवालों के उत्तर अभी भी नहीं दिए जा सके हैं मसलन हमने राष्ट्रीय आय तो बढ़ा ली लेकिन क्या संसाधन प्रकृति और आय के अधिकार की स्वतंत्रता मुहैया कराई? शिक्षा में Ph.D का स्तर को ले आए लेकिन क्या स्वतंत्र विचारणा को सुनिश्चित किया? महिला संबंधी आँकड़े तो कुछ आकर्षक बना लिए लेकिन क्या नारी को इतना स्वतंत्र किया कि वह सामूहिक मीमांसा में अपना पक्ष रख सके? आदि।

ऐसे ही सवाल पर्यावरण, वंचित व दलित वर्ग, जनजातियों की सुरक्षा को लेकर उठते हैं जहाँ विकास का स्थान दमन विकास ने लिया और स्थायी स्वतंत्रता को

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

अनदेखी कर छोड़ दिया। बिना इन सवालों को संबोधित किए हम ना तो वास्तव में विकास प्राप्त कर सकते हैं और ना ही स्वतंत्रता।

इसीलिए यह बहुत ज़रूरी हो जाता है कि विकास को सर्व समावेशी बनाकर लोगों की स्वतंत्रता को सुनिश्चित किया जाए। इसके लिए दो-चार कानूनों या योजनाओं का दिखावा काफी नहीं है बल्कि सतत सामाजिक - आर्थिक अभियान चलाए जाने की ज़रूरत है। लोगों को स्वयं अपने विकास के प्रति जागरूक करना और समतावादी करना इसकी सबसे कारगर दवा है और स्कैन्डेनेवियन देश इसका सुंदर उदाहरण हैं।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

सरकार द्वारा उठाए गए कुछ कदम इस दिशा में सराहनीय भी हैं जैसे कि PM आवास योजना, राष्ट्रीय ग्रामीण एवं शहरी आजीविका मिशन, स्टार्ट अप इंडिया, स्किल इंडिया और जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय कार्य योजना आदि।

अंतिम रूप से यही कहा जा सकता है कि विकास अपने आप में एक सकारात्मक अवधारणा है अतः यह नकारात्मक नहीं हो सकती। इसका नकारात्मक होना यह दर्शाता है कि वास्तविक विकास नहीं किया गया है अतः विकास की गुणात्मकता इसी में है कि वह जन्म से स्वतंत्र व्यक्ति को अंत तक

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

स्वतंत्र बनाए रखे। इसीलिए यह कहा भी जाता है कि -

"विकास को आवश्यक रूप से ऐसा होना चाहिए जो मनुष्य की स्वतंत्रता के बाधक तत्वों को समाप्त करता जाए।"

इसी से सबका साथ- सबका विकास का सपना पूरा हो सकेगा।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

निबंध : Section B

सुवाओं को नौकरी खोजने वाले की बजाय नौकरी सृजित करने में सक्षम बनाने की आवश्यकता है।

" पाब्लो और डेनियल दो दोस्त थे, दोनों रोज़गार की तलाश में थे। उन्हें एक झील से पानी लाने का काम मिल गया जिसमें कार्य के आधार पर उन्हें भुगतान किया जाता था। पाब्लो संतुष्ट था लेकिन डेनियल इस लाभ को विस्तार देना चाहता था। इसलिए उसने आवश्यक योग्यता हासिल कर ऐसी तकनीकी क्षमता विकसित की जिससे की पानी निरंतर आता रहे। इससे अब डेनियल हर समय लाभ

VISION IAS™

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

में है, अन्यों को भी लाभान्वित कर रहा है और पाब्लो अब भी साधारण रूप से नौकरी में संलग्न है।"

पाब्लो और डेनियल की यह कहानी हमें "नौकरी करने" और "नौकरी सृजित करने" के बीच का अंतर बताती है। इससे हमें पता चलता है कि लाभ की अधिकता और निरंतरता दोनों नौकरी के सृजन में ही अधिक है। यही मांग वर्तमान में युवाओं के संदर्भ में है।

वर्तमान समय में नौकरी खोजने की प्रवृत्ति बढ़ रही है, नौकरी सृजन में या तो कोई सक्षम नहीं है या फिर पर्याप्त संसाधन नहीं है। हम निबंध में इन्हीं बिंदुओं पर चर्चा करेंगे

जो नौकरी सृजित करने की क्षमता के विकास हेतु जरूरी है।

किसी देश की सबसे बड़ी ताकत उस देश की युवाशक्ति होती है। डॉ० ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने तो भारत के संदर्भ में यह कहा था कि आने वाले समय में भारत ही विश्व शक्ति का केंद्र रहा क्योंकि भारत विश्व का सर्वाधिक युवा देश है।

संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष की रिपोर्ट के अनुसार भारत की आबादी का 65 फीसदी हिस्सा युवाओं का है। भारत के लिए यह स्थिति उच्च जनसांख्यिकी लाभांश की है जो 2070 तक भारत के लिए उपलब्ध होगा। यानी भारत के पास

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

असीम संभावनाएं तो मौजूद है लेकिन एक निश्चित समय सीमा तक। इसीलिए देश की युवा आबादी पर फोकस करना प्राथमिक आवश्यकता है।

लेकिन भारत में युवाओं संबंधी आंकड़ों और उनकी स्थिति पर विचार किया जाए तो ये हमारे लक्ष्य के संगत प्रतीत नहीं होते हैं।

आर्थिक सर्वेक्षण 2016-17

पर विचार किया जाए तो इसमें भारत में रोजगार विहीन आर्थिक संवृद्धि का मूल कारण युवा कामबल की अकुशलता को बताया गया। वर्तमान में भारत में 90% रोजगार अनौपचारिक क्षेत्रों में विद्यमान है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

औपचारिक क्षेत्र में रोजगार की मांग होने के बावजूद कौशल की कमी इसमें बाधा बनी हुई है।

वहीं दूसरी ओर सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT) के दौर में युवा शक्ति दोहरे रूप से प्रभावित हो रही है। एक ओर तो उत्पादन में बढ़ते ऑटोमेशन ने रोजगार के अवसरों को कम किया है तो वहीं दूसरी दिशा में युवा ICT के प्रभाव में निष्क्रिय एवं विलासी हो गए हैं। समस्याओं का समाधान स्वयं क्रियाशील बनने की बजाय ऑनलाइन आदि के माध्यम से करने लगे हैं। फेसबुक के एक डेटा के अनुसार भारत में सर्वाधिक यूजर्स होने के साथ सर्वाधिक समय सोशल मीडिया पर

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

बीताने वालो की संख्या भी सबसे ज्यादा है ऐसे में कहा मुक्त ऊर्जा का उपयोग संभव हो सकेगा।

उच्च जनसांख्यिकी लाभांश

और IT में बढ़ते अवसरों का उपयोग युवाओं के कौशल हेतु किया जा सकता है इस संदर्भ में युवाओं को कार्य प्रशिक्षण किया जाना बेहद जरूरी है सरकार द्वारा इसी दिशा में प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना प्रारंभ कि गई है जहाँ जिला कौशल विकास समितियों द्वारा युवाओं को कौशलीकृत किया जा रहा है

भारत में युवाओं की बेरोजगारी का प्रमुख कारण शिक्षा गुणवत्ता की कमी भी है इसी के कारण हम शिक्षित युवाओं

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

के सृजन की बजाय डिग्रीधारी युवाओं की मैन्युफैक्चरिंग कर रहे हैं। आज एक डेटा बेस इंजिनीयर को भी कम्प्यूटर में डेटा एंट्री हेतु कोचिंग लेनी पड़ती है। यहाँ शिक्षा के उपयोग और उपादेयता की माँग कमी दिखाई देती है।

हालांकि सरकार द्वारा अटल टिंकरिंग लैब्स, हैकेथॉन, राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 जैसे महत्वपूर्ण प्रयास किए जा रहे हैं लेकिन प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा में संरचनात्मक व संस्थागत सुधारों की तत्काल आवश्यकता है इसी के साथ गुणवत्तापूर्ण शिक्षकों की संख्या बढ़ाकर छात्र-शिक्षक अनुपात को संतुलित करने की आवश्यकता है।

NCRB के एक डेटा के अनुसार भारत में युवाओं के अपराध

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

प्रवृति की दर में वृद्धि हो रही है भारत के युवा साइबर हैंकिंग, चोरी, ऑनलाइन धोखाधड़ी आदि जैसे अपराधों में संलग्न हो रहे हैं

नशापान और ड्रग्स की लत

युवा शक्ति के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती है भारत में युवा अपराध के मूल कारणों में से यह एक है उड़ता पंजाब जैसी फिल्में इसे उद्घाटित करती है

युवा आबादी में महिलाओं की उपेक्षा करना भी बड़ी बाधा है आर्थिक सर्वेक्षण के अनुसार भारत में कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी केवल 23% है वहीं यूनेस्को साइंस रिपोर्ट के अनुसार अनुसंधान क्षेत्र में केवल 15%

महिलाएँ ही संलग्न है।

इन विभिन्न समस्याओं के आलोक में देश में एक ऐसे इको सिस्टम को तैयार करने की दरकार है जो ना केवल युवाओं को उद्यमी बनने के लिए आकर्षित करे बल्कि उन्हें स्वयं उद्यम पैदा करने हेतु भी प्रेरित करे। सरकार के भी इस दिशा में MUDRA स्कीम, स्टार्ट अप, स्किल इंडिया योजना, डिजिटल इंडिया अभियान, विज्ञान ज्योति कार्यक्रम आदि जैसे प्रयास किए गए हैं।

लेकिन अब भी युवाओं की अकूत संभावनाओं को आकार दिया जाना बाकि है इसके लिए सरकार को चाहिए कि राष्ट्रीय स्तर पर एक कौशलीकरण अभियान चलाया जाए।

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

MSMEs को साख उपलब्ध कराकर उन्हें लाभकारी उद्यम के रूप में स्थापित किया जाए साथ ही कृषि शिक्षा व कृषि निर्यात को बढ़ावा देकर युवाओं में कृषि क्षेत्र की ओर मोड़ा जा सकता है जो समग्र विकास हेतु लाभकारी होगा।

वस्तुतः पोस्ट कोविड वर्ल्ड में यह जरूरी भी है कि देश की सबसे अधिक कामकाजी वर्ग के विकास में सबसे अधिक योगदान दे। इस संदर्भ में हम चीन, जापान और कोरिया (दक्षिणी कोरिया) का उदाहरण ले सकते हैं जिन्होंने देश की युवा ताकत को प्रशिक्षित कर उत्पादकता बढ़ाने की ओर

चैनेलाइज़ किया।

एक महत्वपूर्ण संदर्भ यह भी है कि देश में युवा आबादी के बढ़ते ध्रुवीकरण को रोका जाए। यह प्रवृत्ति ना केवल विकास को बाधित करेगी बल्कि सामाजिक - सांस्कृतिक ताने बाने को भी चोट पहुंचाएगी। भारत जैसे धर्मनिरपेक्ष एवं विविधतापूर्ण देश के लिए जरूरी है की उसकी युवाओं की भीड़ केवल भीड़ हिंसा जैसे कामों में संलग्न ना हो।

यहाँ हम अनुच्छेद 47 का संदर्भ ले सकते हैं जहाँ राज्य को देश में आर्थिक विकास हेतु रक्षा सुधार का कर्तव्य सौंपा गया है साथ ही यह भी जरूरी है कि सरकार

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

द्वारा निवेश के साथ किसी रोग भी इसमें संलग्न है।

अंतिम रूप से यही कहा जा सकता है कि एक उद्यमशील आकांक्षी ही देश में निरंतर विकास पथ पर चलायमान रखती है यह गुणात्मकारी एवं सतत प्रभाव उत्पन्न करती है जिससे विकास पथ स्वमेव चलायमान बना रहता है। बिल्कुल वैसे ही जैसे पाबलो केवल नौकरी करता है और डैनियल आज भी लगातार लाभ को सृजित - अर्जित और वितरित कर रहा है।

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

VISION IAS™

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

युवाओं में नौकरी खोजने वाले की बजाय नौकरी सृजित करने में सक्षम बनाने की आवश्यकता है

कहानी → पाब्लो & डेनियल

↓

Intro + शिक्षा की भूमिका — कहानी ऐसे नौकरी करने व नौकरी देने के अंतर बताती है लाभ की [illegible] सृजन में आवश्यक है युवाओं के संदर्भ में यह क्षेत्र जरूरी है इस [illegible] पर चर्चा

↓

देश में युवा आबादी का महत्व + UN रिपोर्ट + युवाओं की संख्या — अभी संसाधनों में युवाओं का सही शिक्षा में अभाव, नीति [illegible], कौशल आदि की [illegible] का कारण

UN [illegible] युवा आबादी → 65 करोड़ + 2020 तक [illegible] रहेगी ↓ बहुत संभावना

↓

युवाओं के संदर्भ में उद्यमी न बनने के कारण / मानसिकता — [illegible] के दौर में युवाओं में क्रियाशील [illegible] हो न कर [illegible] केवल आसान है इसलिए [illegible] नौकरी की। Eg. [illegible]

व्यावहारिकता की कमी ↓ I [illegible] / [illegible] / [illegible] / [illegible] / [illegible] अर्थव्यवस्था / [illegible] / [illegible] की इच्छा — दोनों में [illegible]

↓

क्या किया — Eg. [illegible] + [illegible] चलेगी

↓

क्या लाभ — विकास, सामाजिक [illegible], राष्ट्रीय [illegible] → [illegible]

↓

आशावादी निष्कर्ष

↓

कहानी [illegible]

ROUGH WORK

VISION IAS™

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

विकास वह अधिकाधिक स्वतंत्रता है, जो लोगों को ऐसा जीवन जीने की अनुमति देती है जिसे वे महत्वपूर्ण मानते हैं।

कथन → अमर्त्य सेन

विकास का अर्थ

स्वतंत्रता के रूप में विकास → बढ़ा आयाम

1991 LPG

377, सबरीमाला

लोगों को स्वयं प्राथमिक होकर महत्व स्थापित करना होगा

लेकिन वास्तविक विकास में मानक बनाकर आगे बढ़ें

आशावादी निष्कर्ष

विकास में आवश्यक है कि ऐसा होना चाहिए जो मानव की स्वतंत्रता में सार्थक तत्व को सम्मान करता आगे बढ़े।